कविग्राम

वर्ष 2, अंक 1, जनवरी 2021

हिंदी का पद्म अलंकरण

नूतन वर्ष की

शुभकामनाएँ

2021

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

कविग्राम

वर्ष 2, अंक 1, जनवरी 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

शोध तथा संग्रहण
मनीषा शुक्ला
शनि अवस्थी

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

सर्वाधिकार
कविग्राम

सम्पर्क

8090904560

TheKavigram@gmail.com

kavigram.com

facebook.com/kavigram

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

यह पत्रिका नियमित रूप से अपने व्हाट्सएप पर निःशुल्क प्राप्त करने के लिये कृपया साथ में दिये गये हरे निशान पर स्पर्श करें। स्पर्श करने पर जो व्हाट्सएप खुलेगा, उसमें अपना नाम तथा अपने शहर का नाम लिखकर भेज दें।

सम्पादकीय

देखिये पाते हैं उश्शाक़ बुतों से क्या फ़ैज़
इक बरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है –**मिर्ज़ा ग़ालिब**

जिस बरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है
उसको दफ़नाओ मेरे हाथ की रेखाओं में –**क़तील शिफ़ाई**

न शबो–रोज़ ही बदले हैं न हाल अच्छा है
किस बहरमन ने कहा था कि ये साल अच्छा है –**अहमद फ़राज़**

बाद के दोनों शायरों ने चचा ग़ालिब के दो मिसरों का बेहतरीन जवाब तो दिया है, लेकिन ज़िन्दगी की तबीयत बिगड़ने पर दवा से भी पहले जिस उम्मीद की ज़रूरत होती है, वह उम्मीद केवल ग़ालिब के शेर में ही मुस्तैद दिखाई देती है।

बेशक़ वर्ष 2020 दुनिया भर के लिये चुनौतियों से भरा था, लेकिन हल की चुभन से बिलखकर धरती भी यदि किसान को कोसने लगे तो खेतों में फ़सलों के लहलहाने का चलन ही बन्द हो जायेगा। बीते साल सृष्टि ने पूरी दुनिया को मिट्टी की तरह गूंध दिया है, इस मिट्टी को सकारात्मकता के चाक पर चढ़ाकर सुराही बनाने का काम भी किया जा सकता है और अपनी आँखों से इसे सूखकर धूल होते भी देखा जा सकता है।

यह तय है कि जिन पीढ़ियों ने हमारे हाथ में यह दुनिया सौंपी है, उनके समक्ष भी कमोबेश ऐसे हालात ज़रूर आये होंगे, लेकिन उनमें से किसी ने भी इनमें से दूसरा विकल्प चुना होता तो अब तक हम अस्तित्वविहीन हो चुके होते।

सृजन की राह पर जिसके समक्ष जितनी बड़ी चुनौती आई है, उसने उतनी ही दीर्घजीवी रचना रची है। यदि हमारी पीढ़ी को सृष्टि की सबसे विकराल समस्या से जूझने का अवसर मिला है तो हमारे पास सृजन का अवसर भी सबसे बड़ा है। इस दृष्टि से वर्ष 2020 को विदा करके वर्ष 2021 में प्रविष्ट हो रही दुनिया को नववर्ष की अनन्त शुभकामनाएँ!

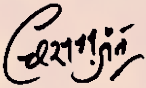

facebook

हिन्दी का पद्म अलंकरण

साधना की प्रशंसा करना किसी भी शासन का दायित्व होता है। इसी उद्देश्य से भारतीय प्रतिभाओं के प्रोत्साहनार्थ नागरिक सम्मानों की व्यवस्था की गयी है। भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' के नाम से जाना जाता है। स्वाधीनता के बाद से अब तक कुल 47 लोग इस सम्मान से अलंकृत किये गये हैं। इसके उपरान्त क्रमशः पद्मविभूषण, पद्मभूषण तथा पद्मश्री पुरस्कारों के माध्यम से भारत सरकार अपने देश की विशिष्ट मेधा की प्रशंसा करती है। उक्त चारों अलंकरण भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किये जाते हैं।

हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी कविता की विशेष प्रतिभाओं को 'साहित्य एवं शिक्षा' श्रेणी के अन्तर्गत पद्म सम्मान दिया जाता है। इसी श्रेणी में पत्रकार, शिक्षाविद्, योगाचार्य, अन्य भाषाओं के साहित्यकार तथा अन्य किसी भी क्षेत्र में विशेष लेखन करने वाली प्रतिभाएँ भी गणित होती हैं। इस सूची में हिन्दी के अनेक महत्त्वपूर्ण लेखक देखने को मिलते हैं। यद्यपि हिन्दी भाषा-भाषियों की जनसंख्या के अनुपात में यह संख्या किंचित न्यून दिखाई देती है, तथापि इस सूची से गुज़रते हुए हिन्दी के अनेक दैदीप्यमान नक्षत्रों की आभा से मन आलोकित हो गया।

स्वाधीनता के उपरान्त हिन्दी जगत् के केवल दो नाम 'भारत रत्न' की सूची में दिखाई देते हैं। प्रथम राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन को वर्ष 1961 में यह अलंकरण प्राप्त हुआ। देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा बनाने के इनके प्रयासों के लिये हिन्दी जगत् राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन का सदैव आभारी रहेगा। इसके उपरान्त वर्ष 2015 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस सूची में सम्मिलित हो गये। हिन्दी कविता का एक लाड़ला बेटा अपने हिन्दी प्रेम तथा काव्य-प्रेम के साथ राजनीति के सर्वोच्च पायदान तक पहुँचा, यह हिन्दी के लिये गौरव का विषय है।

पद्मविभूषण अलंकरण की सूची में भी हिन्दी की प्रतिभाओं की संख्या लगभग नगण्य है। वर्ष 1988 में महीयसी महादेवी वर्मा के उपरान्त वर्ष 2004 में अमृता प्रीतम को ही पद्मविभूषण से नवाज़ा गया है। वर्ष 1954 में जब पद्म सम्मानों की शुरुआत हुई थी तब हिन्दी साहित्यकारों को सामान्यतया पद्मभूषण ही प्रदान किया जाता था। वर्ष 1965 से पूर्व किसी भी हिन्दी साहित्यकार का नाम पद्मश्री अथवा पद्मविभूषण की सूची में नहीं दिखाई देता। इन ग्यारह वर्षों में क्रमशः श्री मैथिलीशरण गुप्त, महीयसी महादेवी वर्मा, आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, श्री रामधारी सिंह दिनकर, श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन, आचार्य शिवपूजन सहाय, श्री सुमित्रानन्दन पन्त, श्री रामकुमार वर्मा, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री राहुल सांकृत्यायन तथा श्री वृन्दावनलाल वर्मा को पद्मभूषण से अलंकृत किया गया।

वर्ष 1965 में जब श्री वृन्दावनलाल वर्मा पद्मभूषण से विभूषित हुए, उस समय पण्डित गोपालप्रसाद व्यास भी सम्मान अर्पण समारोह में सम्मिलित थे। महामहिम राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन ने जब उनके वक्ष पर पद्मश्री का तमगा लगाया तब पद्मश्री की सूची में पहली बार हिन्दी के किसी बेटे का नाम दर्ज हुआ। पण्डित गोपालप्रसाद व्यास न केवल हिन्दी के एक श्रेष्ठ लेखक थे, अपितु स्वाधीनता के बाद दिल्ली के उर्दूनुमा माहौल में हिन्दी के बीज बोने वाले कर्मठ हिन्दीसेवी भी थे। हिन्दी हास्य तथा व्यंग्य की चर्चा पण्डित गोपालप्रसाद व्यास के नाम के बिना हमेशा अधूरी रहेगी।

वर्ष 1966 में राजकवि इन्द्रजीत सिंह तुलसी को पद्मश्री प्रदान की गयी। शोर, बॉबी, चोर मचाये शोर, सौदा, दो जासूस, फकीरा और कालीचरण जैसी अनेक फिल्मों में गीत लिखने वाले तुलसी जी, हिन्दी की वाचिक परम्परा के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर थे। 'पानी रे पानी तेरा रंग कैसा' सरीखा अविस्मरणीय गीत लिखने वाला यह कवि कवितापाठ करते-करते मंच पर ही फ़ना हो गया।

वर्ष 1969 में कानपुर के श्री श्यामलाल गुप्त पार्षद को भारत सरकार ने पद्मश्री से नवाज़ा। ये वही श्यामलाल गुप्त पार्षद हैं, जिन्होंने 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा' जैसा अमर गीत लिखा। वर्ष 1948 में बनी हिन्दी फिल्म 'आज़ादी की राह पर' में इस गीत को फिल्माया भी गया। और इस गीत को गाने वालों में एक स्वर भारत कोकिला सरोजिनी नायडू का भी रहा।

वर्ष 1969 में अमृता प्रीतम को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वर्ष 1970 में श्री सोहनलाल द्विवेदी तथा श्री फणीश्वरनाथ रेणु को पद्मश्री

अलंकरण प्रदान किया गया तथा इसी वर्ष यशपाल जी को पद्मभूषण प्राप्त हुआ। वर्ष 1971 में भी हिन्दी गद्य के लोकप्रिय रचनाकार श्री जैनेन्द्र कुमार तथा भगवती चरण वर्मा पद्मभूषण की सूची में रहे। वर्ष 1972 के पद्म अलंकरण समारोह में हिन्दी के लाड़ले बेटे श्री धर्मवीर भारती को पद्मश्री से नवाज़ा गया।

वर्ष 1973 में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को पद्मभूषण सम्मान मिला। दिल्ली में हिन्दी भवन की स्थापना करवाने वाले हिन्दीसेवियों में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम भी महत्त्वपूर्ण है। शहीदों की स्मृति ग्रंथमाला प्रकाशित करवाने के लिए समर्पित रहे बनारसीदास जी अपनी हिन्दी सेवा की बदौलत राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

वर्ष 1974 में डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' को तथा वर्ष 1976 में श्री बेक़ल उत्साही उर्फ मोहम्मद शफ़ी ख़ान को पद्मश्री अलंकार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1976 में ही डॉ. हरिवंश राय बच्चन को पद्मभूषण अलंकार प्रदान किया गया। इसके बाद अगले चार वर्ष तक हिन्दी, पद्म अलंकार समारोह में नहीं पहुँच सकी। वर्ष 1981 में श्री अमृतलाल नागर को पद्मभूषण से अलंकृत करके सरकार ने इस रुके हुए सिलसिले को पुनः प्रारंभ किया। फिर वर्ष 1982 में गौरा पन्त शिवानी ने हिन्दी की उपस्थिति दर्ज कराते हुए पद्मश्री अलंकरण ग्रहण किया। 'दिवंगत हिन्दी साहित्यसेवी कोश' बनाने वाले आचार्य क्षेमचन्द सुमन को 1984 में पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 1985 में पद्मम अलंकरण समारोह हिन्दी हास्य-व्यंग्य के दो पुरोधाओं के सम्मान से गौरवान्वित हुआ। हास्य कविता के शिखर पुरुष श्री काका हाथरसी और हिन्दी व्यंग्य के महारथी श्री हरिशंकर परसाई को इस वर्ष पद्मश्री से अलंकृत किया गया। वर्ष 1988 में श्री विद्यानिवास मिश्र पद्मश्री से सम्मानित हुए।

वर्ष 1989 में भी हिन्दी हास्य-व्यंग्य के दक्ष रचनाकार श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी का नाम पद्मभूषण प्राप्त करने वालों की सूची में रहा। वर्ष 1990 में हिन्दी व्यंग्य के सबसे योग्य बेटे श्री शरद जोशी को पद्मश्री से नवाज़ा गया। वर्ष 1991 के पद्म अलंकरण समारोह में हिन्दी की वाचिक परम्परा के सिद्धहस्त गीतकार श्री गोपालदास नीरज को पद्मश्री अलंकार प्रदान किया गया। इसी वर्ष श्रीमती शीला झुनझुनवाला तथा श्री केशव मलिक के नाम भी पद्मश्री की सूची में रहे। इसके सात वर्ष बाद वर्ष 1998 में हिन्दी के गांधीवादी लेखक श्री भीष्म साहनी को पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। वर्ष 1999 में डॉ. कन्हैयालाल नन्दन को पद्मश्री सम्मान मिला। इसी वर्ष श्री शिवमंगल

सिंह 'सुमन' तथा श्री विद्यानिवास मिश्र को पद्मभूषण अलंकरण प्रदान किया गया।

वर्ष 2000 में एक बार फिर हिन्दी गद्य व्यंग्य के एक पुरोधा श्री के पी सक्सेना को पद्मश्री सम्मान मिला। वर्ष 2001 में श्रीमती पद्मा सचदेव को, वर्ष 2002 में श्री निर्मल वर्मा को तथा वर्ष 2003 में श्री जगदीश चतुर्वेदी को पद्मश्री सम्मान से नवाज़ा गया।

वर्ष 2004 में हिन्दी के अनेक रचनाकार पद्म अलंकरण समारोह का हिस्सा बने। इस वर्ष एक साथ छह प्रतिभाओं को पद्म सम्मान प्रदान किये गये। पद्मश्री प्राप्त करने वालों में राजस्थान के राजकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया जी और 'हल्दीघाटी' जैसी अमर रचना के रचयिता श्री श्यामनारायण पाण्डेय के साथ श्री लीलाधर जगूड़ी और श्री रमेश चन्द्र शाह भी शामिल रहे। इसी वर्ष पद्मभूषण अलंकरण से श्री विष्णु प्रभाकर को तथा पद्मविभूषण से श्रीमती अमृता प्रीतम को सम्मानित किया गया। वर्ष 2006 में हिन्दी के प्रख्यात कहानीकार श्री कमलेश्वर और श्रीमती दिनेश नन्दिनी डाल्मिया को पद्मश्री अलंकरण प्रदान किया गया। वर्ष 2007 में श्री गिरिराज किशोर को पद्मश्री से तथा श्री गोपालदास नीरज को पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। 'राग दरबारी' जैसी कालजयी कृति के लेखक श्री श्रीलाल शुक्ल को वर्ष 2008 में पद्मभूषण सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2009 में हिन्दी की विचार कविता के श्रेष्ठतम हस्ताक्षर श्री कुँअर नारायण पद्मभूषण से अलंकृत हुए।

वर्ष 2010 में हिन्दी की वाचिक परम्परा के एक महारथी डॉ. सुरेन्द्र दुबे को पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ। वर्ष 2013 में हास्य कविता के श्रेष्ठ हस्ताक्षर श्री सुरेन्द्र शर्मा पद्मश्री से अलंकृत हुए और वर्ष 2014 में डॉ. अशोक चक्रधर ने यह सम्मान प्राप्त किया। वर्ष 2015 में गद्य व्यंग्यकार श्री ज्ञान चतुर्वेदी तथा हास्य कवि डॉ. सुनील जोगी को पद्मश्री अलंकरण प्राप्त हुआ। वर्ष 2017 में हिन्दी के विख्यात राष्ट्रवादी चिन्तक श्री नरेन्द्र कोहली का नाम पद्मश्री की सूची में सम्मिलित रहा। इसके बाद गत तीन वर्ष से हिन्दी पद्म अलंकारों से दूर रही है।

उर्दू के भी अनेक साहित्यकारों को पद्म अलंकारों से सम्मानित किया जा चुका है। जोश मलीहाबादी, अली सरदार ज़ाफ़री, फ़िराक़ गोरखपुरी, सागर निज़ामी, साहिर लुधियानवी, जोश मल्सियानी, कैफ़ी आज़मी, गोपीनाथ अमन, क़लीम आजिज़, कुर्तुल-ऐन-हैदर, सैयद अली जावेद ज़ैदी, अली अहमद सुरूर, बशीर बद्र, सरदार

अन्जुम, जावेद अख़्तर, बलराज कोमल, निदा फ़ाज़ली और अनवर जलालपुरी सरीखे अनेक उर्दू रचनाकार पद्म सम्मान से अलंकृत हो चुके हैं। महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, गोपालदास नीरज तथा विद्यानिवास मिश्र पद्म सम्मान दो बार प्राप्त करने वाले रचनाकार हैं।

भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में हिन्दी की तमाम प्रतिभाएँ सम्मिलित हुई हैं, लेकिन अभी भी हिन्दी के अनेक ऐसे सेवक हैं, जिन्हें इन सम्मानों से अलंकृत करके उनकी प्रतिभा तथा साधना का धन्यवाद ज्ञापन किया जाना शेष है।

■ चिराग़ जैन

दो संस्मरण

शरद जोशी और पद्मश्री

पद्मश्री मिलने के बाद मुम्बई के पहले आयोजन में शरद जोशी जी को आना था। मैं उन्हें लेने उनके घर पहुँचा। वे तैयार थे, लेकिन इरफ़ाना भाभी कहीं बाहर गई थीं, सो वे उनका इन्तज़ार कर रहे थे कि भाभी आयें तो उन्हें बताकर निकलें।

देर हो रही थी और मैं बेचैन हो रहा था। शरद जी ने मेरी बेचैनी भाँप ली और मुझे दिलासा देते हुए बोले– "जल्दी आने को कहा था मैंने, आती ही होंगी। वैसे इतना तो तुम भी जानते हो कि मलाड मार्किट में बहुत भीड़ होती है। धक्का-मुक्की हो जाती है। देरी-शेरी भी हो जाती है। कोई पद्मश्री लेने थोड़े ही गई हैं कि आराम से सुबह की फ्लाइट से जाओ और पद्मश्री लेकर लौट आओ!"

शरद जोशी जी दिल्ली से पद्मश्री लेकर लौटे तो हम कुछ चेले-चपाटे बधाई देने उनके घर पहुँचे। बधाई भी देनी थी और पद्मश्री का तमगा देखने की सबकी इच्छा भी थी। शरद जी से कहा– "सरजी, पद्मश्री का तमगा तो दिखाइये!"

शरद जी बोले– "पद्मश्री... रखी होगी यहीं कहीं। मेरा नाती खेल रहा था उससे। बच्चा है, अब उसे क्या पता कि इस देश में लोग पद्मश्री पाने के लिये क्या-क्या करते हैं! शरद जी को मिल गयी है तो जनाब को क़द्र ही नहीं है। लापरवाही से रख दी है कहीं।"

facebook ■ सुभाष काबरा

कलैण्डर बोलता है...

जनवरी

1 जनवरी	जयन्ती	ब्रजेन्द्र अवस्थी	
	जयन्ती	राहत इन्दौरी	
	जन्मदिन	जमना प्रसाद उपाध्याय	facebook
	जन्मदिन	लक्ष्मीदत्त तरुण	
	जन्मदिन	महेन्द्र अजनबी	facebook
	जन्मदिन	गीतेश्वर बाबू घायल	facebook
	जन्मदिन	सुनील जोगी	facebook
	जन्मदिन	अर्जुन सिंह चांद	facebook
	पुण्यतिथि	सुरेन्द्र दुबे	
2 जनवरी	जन्मदिन	सरोज कुमार	
	जन्मदिन	सविता असीम	facebook
	पुण्यतिथि	अनवर जलालपुरी	
3 जनवरी	जन्मदिन	बागेश्री चक्रधर	facebook
4 जनवरी	जयन्ती	गोपालदास नीरज	
	जन्मदिन	साजन ग्वालियरी	facebook
5 जनवरी	जन्मदिन	मासूम ग़ाज़ियाबादी	facebook
6 जनवरी	पुण्यतिथि	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	
	जयन्ती	भरत व्यास	
	जयन्ती	श्रवण राही	
	जन्मदिन	प्रेरणा कौशिक	
7 जनवरी	पुण्यतिथि	किशन सरोज	
	जयन्ती	प्रताप दीक्षित	
8 जनवरी	जयन्ती	कैलाश गौतम	
	जन्मदिन	सुरेन्द्र दुबे	
	जन्मदिन	लाजपत राय विकट	facebook
9 जनवरी	जयन्ती	वृन्दावन लाल वर्मा	
	जन्मदिन	बलजीत कौर तनहा	facebook
10 जनवरी	जन्मदिन	लक्ष्मीशंकर वाजपेयी	facebook
	जन्मदिन	शम्भू शिखर	facebook
	पुण्यतिथि	गिरिजा कुमार माथुर	

11 जनवरी	जन्मदिन	कृष्णकांत मधुर	facebook
	जन्मदिन	नन्दिनी श्रीवास्तव हर्ष	facebook
12 जनवरी	जन्मदिन	विष्णु सक्सेना	facebook
13 जनवरी	जन्मदिन	सपना सोनी	facebook
17 जनवरी	जन्मदिन	माया गोविन्द	
18 जनवरी	जन्मदिन	प्रकाश प्रलय	facebook
	पुण्यतिथि	हरिवंश राय बच्चन	
21 जनवरी	जन्मदिन	सतीश मधुप	facebook
22 जनवरी	जयन्ती	देवराज दिनेश	
	पुण्यतिथि	ब्रजेन्द्र अवस्थी	
25 जनवरी	जयन्ती	तारा प्रकाश जोशी	
25 जनवरी	जन्मदिन	रासबिहारी गौड़	facebook
	जन्मदिन	शालिनी सरगम	facebook
	पुण्यतिथि	रामस्वरूप सिन्दूर	
29 जनवरी	जयन्ती	किशन सरोज	
	जन्मदिन	रमेश मुस्कान	facebook
30 जनवरी	जयन्ती	जयशंकर प्रसाद	
	जन्मदिन	पद्म अलबेला	facebook
	पुण्यतिथि	माखनलाल चतुर्वेदी	
	जन्मदिन	कमल आग्नेय	facebook
31 जनवरी	जयन्ती	प्रमोद तिवारी	

श्रद्धांजलि

तीन जनकवियों का अवसान

श्री प्रताप दीक्षित
जन्म : 7 जनवरी 1932
निधन : 25 दिसम्बर 2020

श्री माधव दरक
जन्म : 13 अगस्त 1935
निधन : 26 दिसम्बर 2020

श्री जगन्नाथ विश्व
जन्म : 30 अक्टूबर 1937
निधन : 26 दिसम्बर 2020

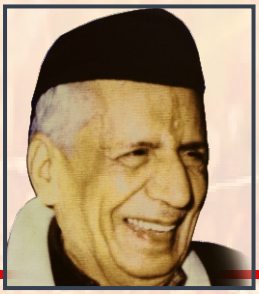

ख़ूनी हस्ताक्षर

वह ख़ून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं
वह ख़ून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं
वह ख़ून कहो किस मतलब का, जिसमें जीवन, न रवानी है
जो परवश होकर बहता है, वह ख़ून नहीं, पानी है!

उस दिन लोगों ने सही-सही ख़ूं की क़ीमत पहचानी थी
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में मांगी उनसे क़ुर्बानी थी
बोले- 'स्वतन्त्रता की ख़ातिर बलिदान तुम्हें करना होगा
तुम बहुत जी चुके हो जग में, लेकिन आगे मरना होगा

आज़ादी के चरणों में, जो जयमाल चढ़ायी जायेगी
वह सुनो, तुम्हारे शीशों के फूलों से गूँथी जायेगी
आज़ादी का संग्राम कहीं पैसे पर खेला जाता है!
यह शीश कटाने का सौदा नंगे सर झेला जाता है।'

यूँ कहते-कहते वक्ता की आँखों में ख़ून उतर आया
मुख रक्त-वर्ण हो दमक उठा, दमकी उनकी रक्तिम काया
आजानु-बाहु ऊँची करके, वे बोले- 'रक्त मुझे देना
इसके बदले भारत की आज़ादी तुम मुझसे लेना।'

हो गई सभा में उथल-पुथल, सीने में दिल न समाते थे
स्वर इंक़लाब के नारों के कोसों तक छाये जाते थे
"हम देंगे-देंगे ख़ून" -शब्द बस यही सुनायी देते थे
रण में जाने को युवक खड़े तैयार दिखायी देते थे

बोले सुभाष- 'इस तरह नहीं, बातों से मतलब सरता है
लो, यह काग़ज़, है कौन यहाँ आकर हस्ताक्षर करता है
इसको भरनेवाले जन को सर्वस्व-समर्पण करना है
अपना तन-मन-धन-जन-जीवन माता को अर्पण करना है

पर यह साधारण पत्र नहीं, आज़ादी का परवाना है
इस पर तुमको अपने तन का कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है
वह आगे आये, जिसके तन में ख़ून भारतीय बहता हो
वह आगे आये, जो अपने को हिन्दुस्तानी कहता हो

वह आगे आये, जो इस पर ख़ूनी हस्ताक्षर देता हो
मैं क़फ़न बढ़ाता हूँ, आये जो इसको हँसकर लेता हो!
सारी जनता हुंकार उठी- 'हम आते हैं, हम आते हैं
माता के चरणों में यह लो, हम अपना रक्त चढ़ाते हैं!'

साहस से बढ़े युवक उस दिन, देखा, बढ़ते ही आते थे
चाकू-छुरी कटारियों से, वे अपना रक्त गिराते थे
फिर उस रक्त की स्याही में, वे अपनी क़लम डुबाते थे
आज़ादी के परवाने पर हस्ताक्षर करते जाते थे

उस दिन तारों ने देखा था हिन्दुस्तानी विश्वास नया
जब लिखा था रणवीरों ने ख़ूं से अपना इतिहास नया

■ गोपाल प्रसाद व्यास

ऐ नये साल

ख़ैरमकदम तेरा करना मेरी मजबूरी है
रस्मो-उम्मीद का नुक़सान नहीं कर सकता
सारी दुनिया ने दीये दिल के जला रक्खे हैं
सबकी हसरत को पशेमान नहीं कर सकता
ऐ नये साल, हूँ क़िरदार से वाक़िफ़ तेरे
तुझपे पहरों नहीं, इक उम्र बोल सकता हूँ
जो दिया तेरे बुज़ुर्गों ने अह्ले-दुनिया को
उसकी मैं सारी हक़ीक़त को खोल सकता हूँ
फिर भी ख़ामोश यही सोच के रह जाता हूँ
नीन्द टूटी तो कई ख़्वाब बिखर जायेंगे
अह्ले-उम्मीद की उम्मीद का फिर क्या होगा
ख़्वाब ख़्वाबीदा ज़माने के किधर जायेंगे
इस दफ़ा छोड़ के पुरखों के चलन को नादां
जिसकी उम्मीद है, चाहे वो ख़ुशी मत देना
हाँ मगर इतनी गुज़ारिश है नये साल मेरी
जो दिया तेरे बुज़ुर्गों ने वही मत देना
छोड़ पुरखों का चलन तू तो इनायत कर दे
कितनी हसरत से तुझे अह्ले-जहाँ तकते हैं
इतने भोले हैं क बदले में जफ़ाओं के तुझे
कई सदियों अभी पलकों पे बिठा सकते हैं
हाँ, मग़र टूटेगा जब इनके सब्र का दामन
तुझको उस रोज़ के ख़तरों का भी एहसास नहीं
लोग कहते हैं क उम्मीद पे सब क़ायम है
तुझको इन लोगों की उम्मीद का भी पास नहीं

इनकी उम्मीद से खेला तो एक दिन नादां
आबरू तेरी हवाओं में बिखर जायेगी
यूँ ही कटते रहे ग़र इनकी तमन्ना के गले
सारी दुनिया तुझे वीरान नज़र आयेगी
फिर न आने पे तेरे जश्ने-बहारां होगा
बस उदासी ही तो नाचेगी रक़्सगाहों में
फिर न आने पे तेरे महफ़िलें रौशन होगी
कौन पलकों को बिछायेगा तेरी राहों में
छोड़ इस बात तू पुरखों की विरासत नादां
हम परसतारों को हँसने की अदाएँ देदे
अह्ले-दुनिया को बख़्स अम्न के नग़्मे यानि
सारी दुनिया को तू ख़ुशियों की दुआएँ दे दे
मशवरा तू मेरा ठुकरा दे भले ही, लेकिन
ख़त्म इस नज़्म का उन्वान नहीं कर सकता
अपनी तहज़ीबो-तमद्दुन की क़सम खाता हूँ
मैं तो तुझको भी पशेमान नहीं कर सकता

facebook ■ **मासूम गाज़ियाबादी**

गये साल का गीत

जैसे-तैसे गुज़रा है पिछला साल

एक-एक दिन बीता है अपना, बस हीरा चाटते हुए
हाथ से निवाले की दूरियाँ, और बढ़ीं पाटते हुए
घर से चौराहों तक, झूलती हवाओं में
मिली हमें, कुछ झुलसे रिश्तों की खाल
जैसे-तैसे गुज़रा है पिछला साल

व्यर्थ हुई लिपियों-भाषाओं की, नये-नये शब्दों की खोज
शहर, लाशघर में तब्दील हुए, गिद्धों का मना महाभोज
बघनखा पहनकर स्पर्शों में, घेरता रहा हमको
शब्दों का ऑक्टोपस जाल
जैसे तैसे गुज़रा है, पिछला साल

facebook ■ **माहेश्वर तिवारी**

ज़ीरो से शुरू करते हैं

एक तस्वीर बनाई थी खिले रंगों से
ज़िन्दगी के हसीं सफ़र में मिले रंगों से
लाल क्या ख़ूब था, कि उसके लब के अंगारे
और काला कि काजलों के सभी गुन हारे
नीला, नीला था कि नीलम का जैसे पत्थर हो
और धानी तो यूँ था जैसे उसकी चूनर हो
रंग ऐसे कि फ़िज़ां में धनक से खिलते थे
हाय तस्वीर क्या तस्वीर बनी थी यारो
रंग राँझा के थे और हीर बनी थी यारो
मुझको ख़्वाबों की वो ताबीर लगी थी यारो
मेरे कमरे में जो जन्नत सी सजी थी यारो

मगर
मैं ज़रा देर को बाहर क्या गया कमरे से
ज़ोर आंधी का न संभला था घर के परदे से
झोंके बारिश के और उस पर हवा भी तूफ़ानी
मेरी तस्वीर के सब रंग धो गया पानी
रंग बहते थे उधर, अश्क़ इधर बहते थे
दिल के हर तार जैसे टूटे-टूटे लगते थे
घण्टों रोया था मैं कि ख़्वाब खो गया अब तो
ऐसा लगता था कि सब ख़त्म हो गया अब तो

फिर?

मग़र अगले ही पर में दिल ने कहा – 'मेरी सुन
हुनर के धागों से यूँ ग़म के तू जाले तो न बुन
हाँ, तेरे रंग की माना कोई क़ीमत तो नहीं
पर ये काग़ज़ ही गला है, कोई क़िस्मत तो नहीं
जिस जगह से शुरू किया था, वहीं चलते हैं
आओ, ज़ीरो से शुरू करते हैं!
आओ, ज़ीरो से शुरू करते हैं!

और

और उस रोज़ हमने ख़ुद से कहा, कर लेंगे
रंग भरना तो अपने हाथों में है, भर लेंगे
इसलिये दोस्त कभी ज़िन्दगी जो तंग करे
और ग़ायब तेरे काग़ज़ से सभी रंग करे
तुमने मेहनत से कोई घोंसला जो जोड़ा हो
वक़्त की आंधियों ने घोंसले को तोड़ा हो
ग़म करो, ठीक है पर ग़म को ज़्यादा वक़्त न दो
ग़म को आँसू दो उसके हिस्से का, फिर आगे बढ़ो
रंग ज़ीरो का देखो, ज़ीरो की ख़ुश्बू देखो
आओ ज़ीरो से शुरू करने का जादू देखो
एक तुम हो ही, इसमें ज़ीरो लगाकर देखो
हो गये दस, यहाँ फिर ज़ीरो बढ़ाकर देखो
अब ये सौ है, तो यहाँ एक ज़ीरो और सही
और हर ज़ीरो के आगे यूँ ही फिर और सही
अब यही ज़ीरो होंगे लाखों, करोड़ो और अरब
यानि ज़ीरो है ज़िन्दगी को बढ़ाने का सबब
पार बादल के आओ, आसमां आबाद रखो
ज़ीरो धरती का मगर ज़िन्दगी में याद रखो
आओ, ज़ीरो से बढ़ के चांद तलक चलते हैं

आओ, ज़ीरो से शुरू करते हैं
आओ, ज़ीरो से शुरू करते हैं

facebook ■ प्रबुद्ध सौरभ

कुछ तमाशा कर नया

जिसकी नुमाइशों से मिटा है मेरा वजूद
दीवार का सुराख़ है तस्वीर के ख़िलाफ़

बाँह थामे साथ मेरे जो चले थे हमसफ़र
वो कलाई से उतरकर उंगलियों तक आ गये

उफ़! हक़ीक़त ने किये हैं टुकड़े-टुकड़े इस क़दर
ख़्वाब चकनाचूर होकर किरचियों तक आ गये

सजाकर मेज पर तुमने जो ये गुलदान रक्खा है
गुलों पर ख़ौफ़ तारी है कि क़ब्रिस्तान रक्खा है

चमन में इस सियासत ने उगा दीं नफ़रतें इतनी
गुलों ने एक-दूजे को ही दुश्मन मान रक्खा है

रिश्ते कुछ तो इतने बोझिल होते हैं
मर जाएँ तो मातम मुश्किल होता है

कुल्हाड़ियों को सान पर घिसा गया उधर
दरख़्त फिर नये इधर उगा दिये गये

ऐ सियासत कुछ तमाशा कर नया
मुल्क़ इस फ़नकार से उकता गया

■ प्रमोद वत्स

पहला दिन
ऑफ नया साल

आज नये साल का
पहला दिन है
या पहली तारीख़ है
और नया साल है
ख़ैर, जो भी बहरहाल है
अपनी तो एक ही धुन है
एक ही ताल है
एक ही टेक है
आज नये साल के
नये माह की तारीख़ एक है।

नयी सुबह है, मन में भय है
क्योंकि यह तय है
कि तक़ाज़े को
अख़बारवाला भी आयेगा
और दूधवाला तो
कान खायेगा ही खायेगा
चूँकि, पिछले महीने भी
कुछ नहीं दिया था
कुछ न देने के एवज़ में
पूरे महीने पनियल दूध पिया था।
लेकिन पिछली बार तो तुक्का चल गया था
इस बार नहीं चल सकेगा
यही मलाल है
हमारा तो यही
पहला दिन ऑफ नया साल है।

facebook वेदप्रकाश वेद

हमारे देश का आकाश

तुम्हें जो गर्व है अपने चमन पर
हमें भी नाज़ है अपने वतन पर
पड़ोसी दुश्मनो! नभ से तुम्हारे-
हमारे देश का आकाश कम ऊँचा नहीं है

अहिंसा-एकता के हम पुजारी, बहुत शालीन हैं प्रहरी हमारे
मग़र यह मत समझना, सौंप देंगे, तुम्हें डल झील में तिरते शिकारे
तुम्हें जो गर्व अपने सैन्य-दल पर, हमें अभिमान अपने आत्मबल पर
तुम्हारे पर्वतों की चोटियों से
हमारे देश का कैलाश कम ऊँचा नहीं है

निवेदन है सभी से, अब हमारे, कपोतों पर न कोई बाज़ छोड़े
भरी बारूद तोपों के दहाने, अब कोई हमारी ओर मोड़े
न हम अन्याय के आगे झुके हैं, अनेकों बार यह दिखला चुके हैं
तुम्हारे व्योमचुम्बी 'सेवरों' से
हमारे 'नेट' का भुजपाश कम ऊँचा नहीं है

हमें अवसर मिला, हमने सराहा, तुम्हारे फ़ैज़ को मेंहदी हसन को
तुम्हें भी है मुनासिब मान देना, हमारे तेवरों को, बाँकपन को
किसी के भाग्य से जलते नहीं हम
तुम्हारी 'ट्रेल' हो चाहे 'बिलफ़' हो
हमारे हाथ में भी ताश कम ऊँचा नहीं है

■ किशन सरोज

वो महाराणा प्रताप कठे?

हळदीघाटी में समर लड्यो, वो चेतक रो असवार कठे
मायड़ थारो वो पूत कठे, वो एकलिंग दीवान कठे
वो मेवाड़ी सिरमौर कठे, वो महाराणा प्रताप कठे

मैं बाचों है इतिहासां में, मायड़ थे एड़ा पूत जण्या
अन-बान लजायो नी थारो, रणधीरा वी सरदार बण्या
बेरीया रा वरसु बादिळा, सारा पड़ ग्या उण रे आगे
वो झुक्यो नहीं नर नाहरियो, हिन्दवा सूरज मेवाड़ रतन
वो महाराणा प्रताप कठे

ये माटी हळदीघाटी री, लागे केसर और चन्दन है
माथा पर तिलक करो इण रो, इण माटी ने निज वन्दन है
या रणभूमि, तीरथभूमि, दर्शन करवा मन ललचावे
उण वीर-सूरमा री यादां, हिवड़ा में जोश जगा जावे
उण स्वामीभक्त चेतक री टापा, टप-टप री आवाज कठे
वो महाराणा प्रताप कठे

संकट रा दन देख्या जतरा, वो आज कुण देख पावेला
राणा रा बेटा-बेटी न, रोटी घास री खावेला
ले संकट ने वरदान समझ, वो आजादी को रखवारो
मेवाड़ भौम री पत राखण ने, कदै भले ना झुकवारो
चरणा में धन रो ढेर कियो, दानी भामाशाह आज कठे
वो महाराणा प्रताप कठे

■ माधव दरक

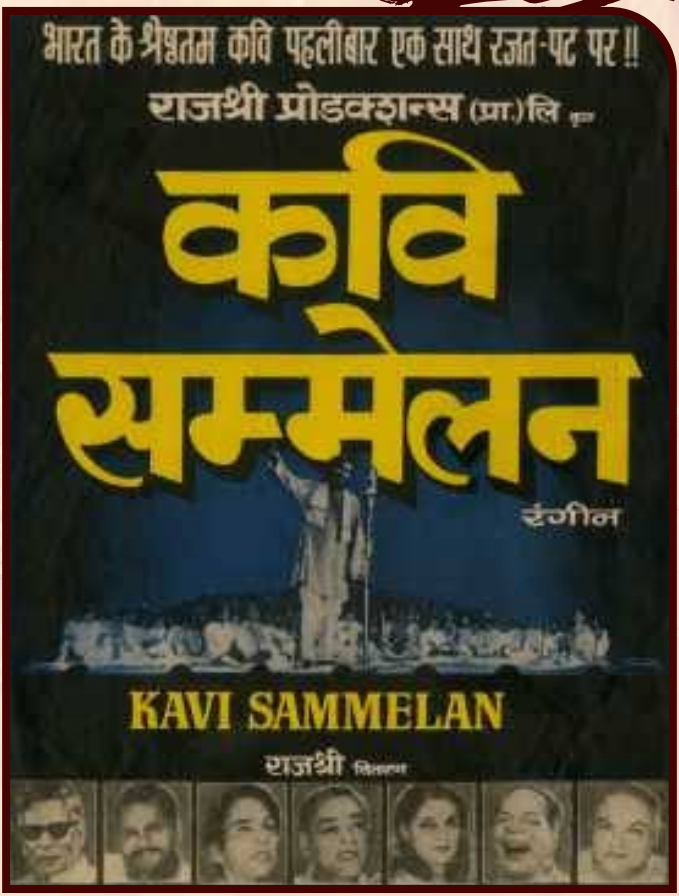

1 जनवरी 1972 को राजश्री प्रोडक्शन्स के बैनर तले 'कवि-सम्मेलन' शीर्षक से बाक़ायदा एक फिल्म रिलीज़ हुई जिसका निर्देशन श्री केदार शर्मा ने किया।
फिल्म में उस समय के लोकप्रिय कवियों का काव्यपाठ सम्मिलित है।

शुभकामनाएँ भाड़ में जाएँ

पिछले वर्षों की तरह यह वर्ष भी बीत गया। जाने वाले को भला कौन रोक सकता है? पूंजीपतियों की बड़ी से बड़ी तिजोरियाँ, नेताओं के बड़े-बड़े वादे और सरकार के बड़े-बड़े क़ानून भी इसे नहीं रोक सके। इस वर्ष के बीतने पर देश के प्रत्येक नागरिक ने आँसू बहाए। बहुत सारे लोग इसकी दी हुई तक़लीफ़ों को याद करके रोये तो कुछ यह सोचकर रोये कि अगला वर्ष शायद पिछले वर्ष जितना ठालीपन न दे सके। रोना-धोना चल ही रहा था कि अचानक नया साल प्रकट हो गया। हमने एकदम अपने आँसू पोंछ लिये और अपनी आदत के अनुसार एक-दूसरे को नये साल की शुभकामनाएँ देने लगे। हम यह भूल गये कि पिछले वर्ष के आरंभ होने पर भी हमने एक-दूसरे को ऐसी ही शुभकामनाएँ दी थीं, जो धरी की धरी रह गयीं।

नववर्ष की शुभकामनाएँ देने का एक रिवाज़-सा पड़ गया है हम लोगों में। लेकिन मैंने अब इस रिवाज़ को तोड़ने का निश्चय कर लिया है। भविष्य में मैं किसी को न तो अपनी शुभकामनाएँ दूंगा, न ही किसी की शुभकामनाएँ लूंगा। ऐसा करने के लिये मेरी पत्नी ने मुझे कहा है और अर्द्धांगिनी के आदेश का पालन करना कोई जुर्म नहीं है।

पहली जनवरी को जब मैं प्रातः बिस्तर से उठा तो मैंने अपनी पत्नी को प्यार और सहानुभूति की दृष्टि से देखा और अनायास ही मेरे मुँह से निकला- 'नये वर्ष की शुभकामनाएँ भाग्यवान!' मेरा यह कहना ही था कि पत्नी ने मकान की छत सिर पर उठा ली। सौभाग्य से छत बीच में आ गयी वरना वह आसमान भी उठाने को तैयार थी। वह आग-बबूला हो गयी। गुस्से में भरकर बोली- 'आपकी ये शुभकामनाएँ, भाड़ में जायें। शुभकामनाओं के बदले अंगीठी सुलगाने के वास्ते मुझे कोयले दो, ताकि घर में कुछ पका सकूँ।

पिछले वर्ष की तुम्हारी और दूसरे लोगों की दी शुभकामनाओं ने हमारे घर में दु:खों के अतिरिक्त दिया ही क्या है ?'

इन शब्दों को सुनकर मुझे आश्चर्य तो हुआ ही, लेकिन साथ-साथ प्रसन्नता भी हुई। आश्चर्य इसलिये कि उस दिन पहली बार इस प्रकार की भाषा का प्रयोग मेरी पत्नी ने किया था और ख़ुशी इसलिये कि मेरे शुभकामनाओं के कारण एक भारतीय महिला में तर्क करने की क्षमता और मन की बात कहने का साहस मैं प्रत्यक्ष रूप से देख रहा था। 'यह लो दस रुपये का नोट। जाओ और कोयला प्राप्त करने के लिये अपनी शुभकामनाओं को आजमाओ। और देखो, मार्ग में चाहे कोई भी मिले, तुम अपनी शुभकामनाओं को अपने पास ही रखना। दूसरा कोई यदि अपनी शुभकामनाएँ आपको दे तो चुपके से खिसक जाना, बिल्कुल स्वीकार मत करना।' इस आदेश के साथ पत्नी बाथरूम में घुस गयी।

मैंने सोचा, पत्नी ठीक ही कहती है।हो सकता है कि इन शुभमनाओं के आदान-प्रदान से ही हम इस हालत तक पहुँचे हों। इस वर्ष नववर्ष की शुभकामनाएँ अगर न ली जायें तो शायद हमारी दशा में सुधार हो जाये। इस प्रकार की बातें सोचता दूसरों से नज़रें बचाता मैं कालूराम जी के कोयले के स्टाल पर पहुँच गया।

कालूराम जी वर्षों से कोयले का धन्धा कर रहे हैं। काम और नाम, दोनों से वे काले हैं। वैसे हैं एकदम गोरे-चिट्टे। कोयले में रेत, मिट्टी और कंकड़ मिलाने में वे बड़े माहिर हैं। शायद इसीलिये अंग्रेजी कोट-पैण्ट पर वे गांधी टोपी पहना करते हैं। कालूराम जी ने अपने स्टॉल पर एक तख़्ती लटका रखी थी, जिस पर लिखा था- 'नववर्ष की शुभकामनाएँ।' मैंने साहस करके पूछ लिया- 'कालूराम जी, आपने शुभकामनाओं की तख़्ती इसीलिये लटका रखी है, कि यहाँ से रेत-मिट्टी मिला कोयला घर ले जाएँ।' कालूराम जी उत्तर के लिये एकदम तैयार थे। कहने लगे- 'मिलावट शब्द बना है, मेल-मिलाप से। हमारे देश में भी मेल-मिलाप यानि मिलावट है तो कुछ ठीक-ठीक चल रहा है। वरना सब कुछ ठप्प हो जाये। यह कहते ही श्री कालूराम जी दूसरों के लिये कोयला तोलने लगे और मैं चुपचाप मिलावटी तर्क का बोझ अपने तन-मन पर उठाये अपने घर लौट आया। द्वार पर देखा तो वहाँ भी एक तख़्ती लटकी थी, जिस पर पत्नी ने लिखा था- कृपया नववर्ष की शुभकामनाएँ मत दीजिये!'

■ **जैमिनी हरियाणवी**

कवि सम्मेलन समाचार

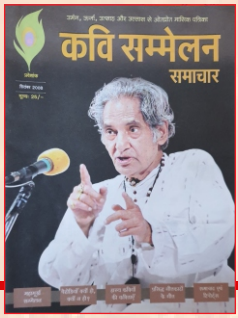

धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान के आकार की एक पत्रिका वर्ष 2008 के सितम्बर माह में 'कवि-सम्मेलन समाचार' शीर्षक से प्रारम्भ हुई, जिसके सम्पादक श्री सुरेन्द्र दुबे थे। यह अपने क़िस्म की पहली और अनूठी पत्रिका थी। कवि-सम्मेलन जगत् के समाचार के साथ-साथ विमर्श तथा शोध की दृष्टि से भी यह एक उत्कृष्ट तथा आवश्यक प्रकाशन सिद्ध हुआ।

पत्रिका ने वाचिक परम्परा के दिग्गज कवियों के विशेषांक प्रकाशित किये। साक्षात्कार जैसी विधा, जो वर्तमान पत्रकारिता से ग़ायब होती जा रही है, उसे पुनर्जीवित करते हुए पत्रिका में अनेक सरस्वती पुत्रों के विस्तृत साक्षात्कार प्रकाशित हुए। ये सभी साक्षात्कार डॉ॰ कीर्ति काले ने किये, जिन्हें बाद में एक पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया गया।

चूँकि पत्रिका के सम्पादक स्वयम् एक श्रेष्ठ रचनाकार थे अतएव पत्रिका में प्रकाशित होने वाली कविताओं का स्तर भी बेहतर होता था। श्री सुरेन्द्र दुबे की अथक साधना और एकल प्रयास से वर्ष 2010 में कुल बाइस अंक प्रकाशित करके यह पत्रिका बन्द हो गई। जिस पीढ़ी ने यह पत्रिका पढ़ी है, वह जानती है कि इस पत्रिका का लगभग प्रत्येक अंक संग्रहणीय है तथा वाचिक परम्परा के साधकों और शोधार्थियों के लिये आज भी पठनीय है। इस बाइस सोपानों में सर्वश्री गोपालदास नीरज, बालकवि बैरागी, माणिक वर्मा, विशम्भर मोदी, जुगल किशोर सुरोलिया, कुँअर बेचैन, माहेश्वर तिवारी, सुरेश उपाध्याय, अशोक चक्रधर, कुमार शिव, श्री कृष्ण तिवारी, ब्यंकट बिहारी पागल, ओमप्रकाश आदित्य, प्रभा ठाकुर तथा मोहन मण्डेला जी पर विशेषांक प्रकाशित किये।■

नीरज जी के नाम पर होगा लखनऊ का एक तिराहा

महाकवि पद्मभूषण गोपालदास नीरज की स्मृति में गोमतीनगर के एक तिराहे का नामकरण उनके नाम पर किया जायेगा। इसके लिये 3 जनवरी को दोपहर 1:30 बजे से लोकार्पण समारोह आयोजित किया जायेगा।

लखनऊ शहर के जनेश्वर मिश्र पार्क तथा विपुलखण्ड को जोड़ने वाले फ्लाईओवर की सड़क के तिराहे को अब नीरज जी के नाम से जाना जायेगा। इसका दायित्व विवेकानन्द समता फाउण्डेशन का होगा। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमन्त्री डॉ. दिनेश शर्मा, नगर विकास मन्त्री आशुतोष टण्डन, क़ानून मन्त्री डॉ. ब्रजेश पाठक, महापौर संयुकता भाटिया, हास्य कवि सर्वेश अस्थाना तथा पार्षद रामकृष्ण यादव समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति समारोह में शिरक़त करेंगे। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया जायेगा जिसमें डॉ. उदय प्रताप सिंह, राजेन्द्र राजन, विष्णु सक्सेना, बलराम श्रीवास्तव, राजीव राज तथा शशांक प्रभाकर काव्यपाठ करेंगे।

अटल जयन्ती पर देश भर में रही कवि-सम्मेलनों की धूम

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयन्ती पर देश भर में अनेक कवि-सम्मेलनों का आयोजन किया गया। कोरोना काल में यह पहला अवसर रहा जब एक साथ पूरे देश में कविताओं की वही रसवृष्टि हुई, जो पहले हुआ करती थी। हिन्दी के लाड़ले बेटे और राजनैतिक सहिष्णुता के प्रतीक रहे अटल जी की स्मृति में आयोजित हुए इन कार्यक्रमों में दर्शक दीर्घा खचाखच भरी रही। उत्तर भारत की भीषण ठण्ड भी लोगों के उत्साह को रोकने में नाकाम रही।

कविग्राम

कविग्राम की पत्रिका यदि आपको व्हाट्सएप संख्या **8090904560** के अतिरिक्त किसी माध्यम से प्राप्त हो रही है तो कृपया उक्त नम्बर पर अपना नाम तथा शहर का नाम लिखकर व्हाट्सएप करें। अगर आपने पहले इस प्रक्रिया के तहत सदस्यता अनुरोध किया है और आपका नाम पंजीकृत नहीं हो पाया है, तो कृपया एक बार पुनः **अपना नाम तथा शहर का नाम 8090904560 पर लिखकर व्हाट्सएप करें।**

कविग्राम परिवार के पास सीमित मानव संसाधन हैं। ऐसे में बहुत संभव है कि आपका संदेश हमसे छूट गया हो। इस स्थिति में कविग्राम को अपना परिवार मानते हुए कृपया हमें क्षमा करें और उक्त प्रक्रिया पर दोबारा प्रयास करें। हम आपके आभारी रहेंगे। एक बार आपका नम्बर हमारे डाटा बेस में दर्ज हो जाने के बाद आपको प्रत्येक माह यह पत्रिका आवश्यक रूप से भेजी जाती रहेगी।